II

Date: / /

विकास ~~कार्य~~ का अर्थ →

स्किनर के अनुसार →

"विकास नियमित और क्रमिक प्रक्रिया है।"

ई० बी हरलॉक के अनुसार → "विकास को परिभाषित करते हुये लिखा है कि "विकास नियमित और क्रमबद्ध रूप में परिवर्तनों के प्रगतिशील क्रम को व्यक्त करता है।

इस कार्य हेतु अधिकाधिक क्रमबद्ध रूप में परिवर्तनों के प्रगतिशील क्रम को व्यक्त करता है।

इस कार्य हेतु अधिकाधित सुविधा प्रदान करने के लिए क्षमताओं को प्रकट करने और विस्तृत ~~करते~~ करने के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

अभिवृद्धि और विकास का सिद्धान्त →

जब बालक विकास को मुक्त अवस्था में इसी अवस्था में प्रयोग करता है। तब इस इसमें कुछ परिवर्तन देखते हैं। ये परिवर्तन निश्चित सिद्धान्तों के अनुसार होते हैं। इन्हीं को हम विकास का सिद्धान्त कहते हैं। ये सिद्धान्त निम्नलिखित है।

1- निरन्तर विकास का सिद्धान्त →

इस सिद्धान्त के अनुसार विकास की प्रक्रिया निरन्तर

Date: / /

चलती रहती है लेकिन यह गति कभी तेज और कभी मन्द होती है।

2→ विकास ~~एवं~~ की विभिन्न गति का सिद्धान्त→

इगलस एवं हालैण्ड के अनुसार "इस सिद्धान्त का स्पष्टीकरण देते हुए लिखा है- विभिन्न व्यक्तियों के विकास की गति में विभिन्नता होती है और यह विभिन्नता विकास के सम्पूर्ण काल में पंचायत बनी रहती है।

विकासक्रम का सिद्धान्त→

इस सिद्धान्त के अनुसार बालक का गायक और भाषा सम्बन्धी विकास एक निश्चित क्रम में होता है। जन्म के समय बालक केवल रोना जानता है। 3 माह में वह गले से एक विशेष प्रकार की आवाज निकालने लगता है।

6 माह में वह आनन्द की ध्वनि करने लगता है।

7 माह में अपने माता-पिता के लिए 'पा, बा, दा, आदि शब्दों का प्रयोग करने लगता है।

4- विकास दिशा का सिद्धान्त→

इस सिद्धान्त के अनुसार बालक का विकास

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया